शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता हिन्द स्वराज के सन्दर्भ में

डॉ.लक्ष्मण शिंदे
उपाचार्य, शिक्षा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

महात्मा गाँधी ने भारत की शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए कई सुझाव दिये, जिन्हें नयी तालीम में स्थान दिया गया। शिक्षा से उनका अर्थ केवल बालक में ही नहीं, वयस्क के अंदर भी जो शारीरिक, मानसिक व नैतिक गुण हैं, उनका संपूर्ण विकास से है। गाँधी जी के शिक्षा संबंधी विचार किताबी ज्ञान पर आधारित नहीं थे। गाँधी जी ने शिक्षण योजनाएं इस प्रकार बनाई कि प्रत्येक कार्य से छात्रों को देश-प्रेम तथा राष्ट्रीयता की प्रेरणा प्राप्त हो। पाठ्यक्रम में भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता और भारतीय इतिहास को प्रमुख स्थान दिया गया। वे चरित्र-निर्माण, सहयोग, एकता, सादगी, उच्च विचार, सत्य, प्रेम और राष्ट्रीय उत्थान पर निरंतर बल देते रहे। गाँधी जी का शिक्षा को लेकर काफी व्यापक दृष्टिकोण रहा। वे शिक्षा को व्यक्ति के संपूर्ण जीवन से जोड़कर देखते थे। उनके अनुसार शिक्षा केवल व्यक्तित्व में सुधार के लिए नहीं बल्कि आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि व्यक्ति विशेष की आत्मनिर्भरता केवल एक व्यक्ति विशेष की आवश्यकता नहीं है, बल्कि पूरे समाज व देश की है। महात्मा गांधी ने इंग्लेंड से दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान प्रश्नोत्तर रूप में 'हिन्द स्वराज' पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक में उन्होंने अन्य प्रश्नों के सामान शिक्षा के प्रश्न पर भी अपने विचार व्यक्त किये। जब प्रश्न किया गया कि जिस शिक्षा को आप निकम्मी बता रहे हैं, उसे तो आपने भी प्राप्त किया है। इसके जवाब में वे कहते हैं कि मैंने इस शिक्षा से अपने आपको मुक्त करने के बाद ही विकास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

गाँधी जी ने राजनैतिक, सामाजिक एवं अन्य क्षेत्रों में इतनी ख्याति प्राप्त की तथा राजनैतिक व समाज के क्षेत्र में उनका इतना योगदान रहा कि उनका शिक्षा क्षेत्र में योगदान प्रायः लोगों की दृष्टि से ओझल हो जाया करता है। किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में उनके विचार किसी उच्च कोटी के शिक्षाशास्त्री की विचारधारा से किसी भी प्रकार से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। गाँधी जी ने शिक्षा के उद्देश्य के रूप में वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार व्यक्ति व समाज एक दूसरे के पूरक हैं। अतः गांधी जी बालकों में नैतिक गुणों का विकास करना चाहते थे। गाँधी जी के अनुसार साक्षरता अपने आप में शिक्षा नहीं है। बच्चे का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा है। जीवन में श्रम का बहुत अधिक महत्व है। गाँधी जी श्रम को जीवन का आधार मानते थे। वे बालकों में श्रम की आदत डालकर श्रम के प्रति आदर बढ़ाना चाहते हैं। गाँधी जी कहते हैं कि

बालकों की शिक्षा शिल्प केन्द्रित होनी चाहिए। शिल्प केन्द्रित शिक्षा के अनेक लाभ हैं। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक सभी दृष्टिकोणों से शिल्प-केन्द्रित शिक्षा को उपयुक्त समझ पड़ती है। उनके अनुसार शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। गाँधी जी विषयों को नितांत तथा पृथक रूप से पढ़ाने के विरूद्ध थे। ज्ञान अंततः एक है। विषयों की दीवारें कृत्रिम तथा सुविधाजन्य हैं। अतः विषयों को यथाविधि साहचर्य-विधि से बढ़ाना चाहिए। गाँधी जी के उपर्युक्त सभी विचार प्रगतिशील विचार हैं। इनमें एक वैज्ञानिक पुट है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह उचित ठहराये जाते हैं और सब में विशेष बात यह है कि आधुनिक शिक्षा की उत्तम प्रणालियों में ये ही सिद्धांत हमें मिलते हैं। यद्यपि यह कहना कठिन है कि गांधी जी किसी आधुनिक पश्चिमी शिक्षण पद्धति के सिद्धांतों का विधिवत ज्ञान रखते थे। उनके निष्कर्ष अपने थे और इन तक वे स्वानुभव से पहुंचे थे।

शिक्षा का अर्थ

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा से तात्पर्य - "बालक मुनष्य के शरीर, मन और अंतरात्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का विकास है।" शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित किया जाता है, उजागर किया जाता है, उसे नये ज्ञान, कुशलताओं, मूल्यों, आदर्शों आदि को सिखाया जाता है जिससे कि वह अपने वातावरण पर अधिकार पा सके, समाज में अपना सही स्थान प्राप्त कर सके और मानव-जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

शिक्षा के उद्देश्य

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का कोई एक उद्देश्य नहीं हो सकता। उन्होंने जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखा है और शिक्षा को तदनुसार कई दृष्टिकोणों से देखा है। जैसे कि-

1. जीविकोपार्जन एवं व्यवसायिक उद्देश्य

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में स्वावलंबन का गुण होना आवश्यक है। जब बालक विद्यालयीन शिक्षा समाप्त करे, तो वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। इसके लिए उसे व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करनी होगी। व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करना देश और समाज के लिए तो लाभकारी है, स्वयं व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा प्राप्त करने पर भी यदि बालक बेकार रहता है, तो इसमें शिक्षा का क्या दोष है। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि गाँधी जी यहां पर जीविकोपार्जन के उद्देश्य का समर्थन करते दिखाई पड़ते हैं। अतः व्यावसायिक उद्देश्य तथा जीविकोपार्जन के उद्देश्य पर गाँधी जी ने बल दिया।

2. सांस्कृतिक उद्देश्य

गाँधी जी व्यवसाय को जीवन के साध्य के रूप में कभी नहीं स्वीकार कर सकते थे। अतः उन्होंने संस्कृति की ओर ध्यान दिया। गाँधी जी ने कहा था "मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष की अपेक्षा सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूँ। संस्कृति प्रारंभिक वस्तु एवं आधार है जिसे बालिकाओं को यहां से ग्रहण करना चाहिए।" इस दृष्टि से गाँधी जी शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य को महत्वपूर्ण मानते हैं।

3. चरित्र विकास

'चरित्र विकास' भी गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है- "मैने हृदय की संस्कृति या चरित्र

निर्माण को प्रथम स्थान दिया है। मैनें चरित्र-निर्माण को शिक्षा की युक्त आधारशिला माना है।"

4. सर्वांगीण विकास

गाँधी जी जीवन के किसी एक विषय तक ही अपने विचार सीमित नहीं रखते थे। उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ- शरीर, मन तथा आत्मा सभी का सर्वोत्तम विकास है। किसी एक पक्ष का विकास एकांगी है। अतः वे बालक के सर्वांगीण विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे।

5. आध्यात्मिक स्वतंत्रता

उपर्युक्त शैक्षिक उद्देश्यों के अतिरिक्त गाँधी जी प्राचीन भारतीय ऋषियों की भांति यह भी कहते हैं कि विद्या सदा मुक्तिदायक होना चाहिए। "सा विद्या या विमुक्तये" उनका भी आदर्श है। अतः शिक्षा द्वारा आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

6. ईश्वर का ज्ञान एवं आत्मानुभूति

आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्राप्ति से ईश्वर का ज्ञान एवं आत्मानुभूति होती है। शिक्षा का यही अंतिम लक्ष्य है। अन्य उद्देश्य तो तात्कालिक हैं। अतः चरम लक्ष्य के रूप में गाँधी जी ईश्वर के ज्ञान एवं अनुभूति को ही स्वीकार करते हैं।

7.वैयक्तिक एवं सामाजिक

गाँधी जी के शैक्षिक उद्देश्यों को यदि हम वैयक्तिक एवं सामाजिक दृष्टि से देखें तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य दोनों प्रकार के हैं। वे वैयक्तिक स्वतंत्रता का सदा आदर करते थे किन्तु व्यक्ति को वे सामाजिक प्राणी के रूप में ही देखते थे। उनका विचार था कि व्यक्तित्व का विकास शून्य में असंभव है।

पाठ्यक्रम

गाँधी जी के विचार से पाठ्यक्रम से केवल बौद्धिक विकास हो सकता है। बौद्धिक विकास साहित्यिक विषयों से हो तो सकता है, किन्तु उससे शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है। प्रचलित शिक्षा प्रणाली में शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास को नजर अंदाज कर केवल मस्तिष्क को शिक्षित करने का प्रयत्न किया है। गाँधी जी के अनुसार यदि पाठ्यक्रम में किसी क्राफ्ट को स्थान दिया जाय तो प्रचलित शिक्षा के दोष दूर हो सकते हैं। अतः उन्होंने क्रियात्मक पाठ्यक्रम की योजना बनाई। इस नवीन पाठ्यक्रम में क्राफ्ट को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। क्राफ्ट कोई भी हो सकता है। भारतीय समाज के अनुसार कृषि, कताई, बुनाई, गत्ते का कार्य, लकड़ी का काम, धातु का काम आदि में से क्राफ्ट को चुना जा सकता है। इस पाठ्यक्रम में मातृभाषा को मुख्य स्थान दिया। शिक्षा के माध्यम के रूप में भी मातृभाषा को चुना। इसके साथ गणित, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग तथा संगीत पाठ्यक्रम को रखा गया। इसके अतिरिक्त सामान्य विज्ञान को स्थान दिया गया। जिसके अंतर्गत जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान, रसायन विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, प्राकृतिक अध्ययन, भौतिक, सांस्कृतिक तथा नक्षत्र ज्ञान के सामान्य तत्व निहित है। गाँधी जी के अनुसार, "पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान, जीवनोपयोगी एवं सार्थक होना चाहिए।"

शिक्षण विधि एवं सूत्र

गाँधी जी ने जिस नवीन शिक्षा योजना का विचार जनता के समक्ष रखा उनमें शिक्षण विधि नितांत नवीन है। प्रचलित शिक्षण-विधि में अध्यापक एवं छात्र में कोई संपर्क नहीं रहता। अध्यापक व्याख्यान देकर चला जाता है और छात्र निष्क्रिय श्रोता के रूप में बैठे रहते हैं। इस दोषपूर्ण शिक्षण

पद्धति के विपरीत गाँधी जी एक ऐसी शिक्षण पद्धति लाना चाहते थे जिसमें छात्र व शिक्षण के बीच की खाई को कम क्या जा सके। इसमें छात्र निष्क्रिय श्रोता न होकर सक्रिय अनुसंधानकर्ता, निरीक्षणकर्ता एवं प्रयोगकर्ता के रूप में हो। इस शिक्षण विधि को हम निम्न बिन्दुओं द्वारा समझ सकते हैं

1.सभी ज्ञानेन्द्रियों का समुचित प्रशिक्षण दिया जाए।

2.पढ़ना पहले सिखाया जाए, लिखना बाद में।

3.चित्रकारी पहले सिखाएं, उसके बाद वर्णमाला के अक्षर लिखना, स्वयं करके सीखने दें।

4.अनुभव के आधार पर सीखने के अधिकाधिक अवसर दें।

5.पढ़ाते समय समवाय विधि अपनाएं।

6.उद्योग शिक्षा पर बल दें।

गाँधी जी ने शिक्षा की जो नवीन योजना भारत के समक्ष रखी उसमें श्रम को अध्यात्मिक महत्व प्रदान किया गया। शिक्षक व अनुशासन

गाँधी जी के अनुसार एक विद्यार्थी के लिए सच्ची पाठ्य-पुस्तक शिक्षक ही है। वे कहते हैं कि शिक्षक का कार्यभार अधिक है। अपेक्षाकृत कक्षा के कमरे में। एक डरपोक शिक्षक कभी भी अपने विद्यार्थियों को बहादुर नहीं बना सकता। जो शिक्षा स्वशासित नहीं है वह अपने विद्यार्थियों को कभी भी स्वशासित नहीं बना सकती। अतः शिक्षक को बालकों में स्वशासन विकसित करना चाहिए। परंतु गांधी जी ने सदैव शारीरिक दण्ड का विरोध किया है। अपितु प्रेम, विश्वास और आदर्श उदाहरण से बालकों को अनुशासित किया जाना चाहिए। आध्यात्मिक शिक्षा प्रार्थना करना आवश्यक है। यदि हम अपने कर्तव्यों का सही प्रकार से पालन करते है तो हमें अपने वांछित अधिकार प्राप्त हो जायेंगे। व्यक्तिगत जीवन में शुद्धता लाने का प्रयास शिक्षकों और सभी विद्यार्थियों को करना चाहिए।

स्त्री शिक्षा

गाँधी जी स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया तथा पर्दा प्रथा का विरोध किया, क्योंकि पुरूष के शिक्षित होने पर केवल स्वयं ही शिक्षित होता है, परंतु जब एक स्त्री शिक्षित होती है तो वह संपूर्ण परिवार को शिक्षित करती है। इसके साथ ही गाँधी जी एक शिक्षक के रूप में स्त्री को पुरूष से बेहतर शिक्षक मानते थे और वे चाहते थे कि शिक्षक के रूप में एक स्त्री शिक्षक ही हो, क्योंकि एक स्त्री भावनात्मक रूप से बच्चों को पुरूष से बेहतर समझती है तथा एक स्त्री से विद्यार्थी अपनी बात आसानी से कह सकते हैं व समस्या को सुलझा सकते हैं। स्त्रियों को शिक्षा मिलनी चाहिए। उनकी शिक्षा में घर के प्रबंध, बच्चों का लालन-पालन और उनकी शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए। गाँधी जी मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने देखा कि उस समय उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करते ही बच्चों को अंगरेजी पढ़नी पड़ती है और उच्च माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में दी जाती है। मेरे सपनों का भारत एक ऐसा भारत जिसमें सबसे निर्धन व्यक्ति भी यह महसूस करेगा कि वह उनका देश है जिसके बचाने में उनकी प्रभावशाली आवाज है। एक ऐसा भारत जिसमें कोई उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के लोग नहीं होंगे। एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय पूर्ण सामंजस्य से रहेंगे। ऐसे भारत में अस्पृश्यता और नशाखोरी की बुराइयों का कोई स्थान नहीं

होगा। स्त्री-पुरूष दोनों के समान अधिकार होंगे। कोई भी किसी का शोषण नहीं करेगा और कोई भी शोषित नहीं हो पायेगा।

मूल्यांकन

गाँधी जी एक आदर्शवादी व प्रयोजनवादी शिक्षा विचारक थे। वे आदर्श मानवीय मूल्यों और भावी स्वाधीन भारत के अनिवार्य सामाजिक मूल्यों और क्षमताओं को प्रदान करने वाली व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करना चाहते थे। वे व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को उभारकर बाहर लाना चाहते थे ताकि व्यक्ति का व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्ण विकास हो सके। वे स्वावलंबी, कर्मठ और समाजसेवी नागरिक बनाना चाहते थे, जो समाज पर बोझ न बने व स्वाभिमान से रहे। गाँधी जी को आधुनिक युग का उत्कृष्ट शिक्षाविद माना गया। यद्यपि उनकी बुनियादी शिक्षा को भारत ने त्याग दिया तथापि सभी गांधीवादी शिक्षक व विद्वान आज भी उनकी नयी तालीम के महत्व को मानते हैं। महात्मा गाँधी एक ऐसा व्यक्तित्व है, जिसने सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया और दुनिया की सोच को ही बदल दिया। उनका शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान रहा। उनकी शिक्षा शैली से ना सिर्फ व्यक्ति शिक्षित हुआ बल्कि उसके व्यक्तित्व में आकर्षक बदलाव देखने को मिला। उनकी शैली अत्यंत आकर्षक है। इस शैली में व्यक्ति का संपूर्ण विकास होता है जो कि व्यक्ति को एक सुखद व सम्मान जनक जीवन जीने में मदद करता है। उन्होंने शिक्षा के साथ एक क्राफ्ट-कार्य को जोड़ा जिससे कि व्यक्ति में श्रम की आदत बनी रहे और वह आलसी न हो, क्योंकि किताबी शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का बौद्धिक व मानसिक विकास तो हो सकता है, परंतु वह शारीरिक रूप से आलसी हो जाता है। गाँधी जी ने सदैव ही शिक्षा के लिए हिन्दी माध्यम पर जोर दिया क्योंकि वे चाहते थे कि हम सदैव अपने धर्म-संस्कृति पर परम्पराओं से जुड़े रहें। हमारे अंदर प्रेम, सद्भाव, एकता, त्याग, सत्य और अंहिसा की भावनओं का समन्वय हो। भाषा ही हमें अपने समाज और उसके लोगों से जोड़े रखती है। गाँधी जी ने शिक्षा के संबंध में कोई पुस्तक नहीं लिखी परंतु उन्होंने समय-समय पर अपने विचारों को व्यक्त किया। सभी विद्यार्थी कभी भी एक शिक्षा-पद्धति के आधार पर हमारी आशानुरूप परिणाम नहीं दे सकते हैं। इसके लिए बच्चों को क्राफ्ट से जोड़कर उनका निरीक्षण कर अनुभव के आधार पर हम शिक्षा पद्धति में कुछ एक बदलाव लाएं, जिससे कि सुधार के साथ-साथ बच्चे एवं उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इसी से शिक्षा लेकर आज के शिक्षण संस्थानों में क्राफ्ट को शिक्षा से जोड़कर शिक्षा देने पर काफी जोर दिया जा रहा है और उसके अनुकूल परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

निष्कर्ष

गाँधी जी का शिक्षा को लेकर काफी व्यापक दृष्टिकोण रहा। वे शिक्षा को व्यक्ति के संपूर्ण जीवन से जोड़कर देखते थे। उनके अनुसार शिक्षा केवल व्यक्तित्व में सुधार के लिए नहीं बल्कि आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी आवश्यक है। गाँधी जी द्वारा लाये गये इसी बदलाव के चलते आज व्यक्ति में आत्मनिर्भर होने की भावना पहले से कहीं अधिक है। गाँधी जी की शिक्षा पद्धति में चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व निर्माण दोनों का ही महत्वपूर्ण स्थान है और उन्होने सदैव चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व निर्माण पर जोर दिया। अतः

वर्तमान में हमारे चरित्र में सुधार की नितांत आवश्यकता है, क्योंकि गाँधी जी के अनुसार चरित्र-निर्माण ही शिक्षा का आधार है। शिक्षक व एक विद्यार्थी के बीच कैसे संबंध हों ताकि विद्यार्थी अपनी समस्याओं को कह सके इसके लिए भी गांधीजी ने अपने विचार व्यक्ति किये। उनके अनुसार एक विद्यार्थी के लिए शिक्षक एक शब्दकोष की तरह होना चाहिए जिसकी सहायता से वह अपनी समस्याओं का हल प्राप्त कर सके। एक शिक्षक को विद्यार्थी की संवेदनशीलता उत्सुकता व भावनाओं के प्रति सजग होना चाहिए। उसे हमेशा विद्यार्थी को प्यार से, शान्ति से समझाना चाहिए। उसके मन को भांपते हुए उससे हमेशा आत्मविश्वास को आगे बढ़ाना चाहिए। विद्यार्थी को यह अनुभव कराना चाहिए कि शिक्षक उसका दोस्त व मार्गदर्शक दोनों है। अतः कह सकते हैं कि गाँधी जी द्वारा दिया गया शैक्षिक दृष्टिकोण मानव समाज के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। रचनात्मक कार्यों को तीव्र गति से आगे बढ़ाना ही उनकी क्रांति का महान लक्ष्य था। वे संत होते हुए भी क्रांतिकारी थे। आज भी गाँधी जी के सिद्धांत समूचे विश्व में विद्युत की भांति निराशा के अंधकार में आशा और नये जीवन के प्रकाश का संचार कर रहे हैं।